''महाकवि कालिदास के साहित्य में आश्रम''

प्रदीप दुबे

कालिदास की कृतियों में वन्य आश्रमों एवं उनके निवासी ऋषियों, मुनियों और विद्यार्थियों के प्रति आदर के दर्शन होते हैं। ये आश्रम सामाजिक मार्यादाओं के प्रतिष्ठापक और नियामक थे। भारतीय समाज में प्राप्त उच्च नैतिकता और जीवन की पवित्रता के उत्स आश्रम ही थे। नागरिक कोलाहल से दूर वन्य उटजों में रहते हुए ये आश्रमी, फलों और नीवार से उदरपूर्ति करते, मृगों के साहचर्य में जीवन बिताते और विद्यार्थियों को मार्ग दशर्न के साथ विद्याध्यन कराते थे। कुलपति अथवा आचार्य इनके प्रमुख होते थे जो सामान्यतया सपत्नीक होते थे। प्रातः सायं यज्ञ के धूम से उनका वातावरण सुरभित रहता था। कालिदास ने अपनी कृतियों में कई स्थानों पर आश्रम का वर्णन किया है जो प्रायः यह बतलाने के लिए हुआ है कि आश्रम राजाओं के लिए वन्द्य है। उनकी प्रतिष्ठा के लिए भी आश्रमों का सम्मान आवश्यक है। यदि राजा समाज का पिता है तो आश्रम मुनि राजाओं के पिता। इसीलिए राजा लोग आश्रम के बाह्य द्वार पर पहुंचते ही अपना सारा तामझाम वहीं छोड़कर नंगे पांव बिना छत्र, चमर और राजकीय महार्ध वस्त्रों, अत्यन्त विनय के साथ भीतर प्रवेश करते थे। आश्रमों की सीमा के भीतर रथ का प्रवेश तथा आखेट सर्वथा वर्जित था।